हिन्दी अनुशीलन

डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल

November 15
हिन्दी
हिन्दी

हिन्दी अनुशीलन

(राजभाषा अनुशीलन)

लेखक

डा. जयन्ती प्रसाद नौटियाल

प्रकाशक :-

मानसी पब्लिकेशन्स
मनीष प्लाजा, 4637/20, प्रथम तल, 124,
अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-110002
दूरभाष :- 011-24504432, 09810303048

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN
81-89559-10-9

मूल्य : 350.00

अक्षर-टंकण
मानसी प्रिन्टोग्राफिक्स, दिल्ली-6

मुद्रक : एस. एन. प्रिन्टर्स शाहदरा, दिल्ली-32

प्राक्कथन

भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में 'राजभाषा' को बी.ए. तथा एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रमों में स्थान दिए जाने के परिणामस्वरूप इस विषय पर कुछ पुस्तकें तो लिखी गई लेकिन विश्वविद्यालयों में राजभाषा संबंधी विषय पर प्रामाणिक अध्ययन सामग्री का अभाव देखते हुए मेरे कई प्राध्यापक मित्रों व प्रकाशकों ने मुझसे आग्रह किया कि मैं विश्वविद्यालय स्तर हेतु राजभाषा पर प्रामाणिक पुस्तक लिखूँ।

चूँकि काफी लम्बे समय तक विश्वविद्यालय शिक्षण से जुड़ा होने के कारण तथा गत तीन दशक से राजभाषा से जुड़े होने के कारण मुझे लगा कि इस दिशा में शीघ्र ही पुस्तक लिखी जानी चाहिए।

इसी दौरान मेरे मित्र पाण्डेय जी ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रस्तावित राजभाषा विषयक पाठ्यक्रम मुझे दिया व आग्रह किया कि विश्वविद्यालय के लिए उपयोगी सभी बिंदुओं को समेटते हुए राजभाषा पर एक ऐसी पुस्तक लिखी जाए जो राजभाषा संबंधी सभी बिन्दुओं पर प्रामाणिक सामग्री समाहित कर सके।

इन बिन्दुओं पर विचार करते हुए मैंने यह पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक में जहाँ एक ओर राजभाषा की विकास यात्रा से लेकर उसके विश्वात्मक स्वरूप पर चर्चा की गई है तो दूसरी ओर राजभाषा के संवैधानिक प्रावधानों को समेटते हुए हिंदी के मानकीकरण तथा इसके अनुप्रयोगात्मक पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है। हिंदी आधुनिकीकरण तथा द्विभाषिक कम्प्यूटरीकरण जैसे नवीनतम पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है। इतना ही नहीं भूमंडलीकरण से राजभाषा पर पड़ने वाले प्रभावों तथा रोजगार के अवसर जैसे ज्वलंत मुद्दों पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। यह पुस्तक राजभाषा संबंधी समस्त आयामों को समेटते हुए लिखी गई है।

पुस्तक लेखन को मुझे सदैव प्रोत्साहित करने हेतु मैं अपने बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री बी. साम्बमूर्ति, कार्यपालक निदेशक श्री के.एल. गोपालकृष्ण, महाप्रबंधक श्री के.ए. कामत, स.म.प्र. कर्नल रा.प्र. गोपालन तथा समस्त कार्यपालक

वर्ग व अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। मेरे राजभाषा प्रभाग के साथियों तथा उन सभी मित्रों के प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जो सदैव मेरी हित चिंता में लगे रहते हैं।

मानसी प्रकाशन की बेला गुप्ताजी के प्रति मैं विशेषरूप से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को इतना सुंदर कलेवर प्रदान किया।

मैं अपनी चिर संगिनी पत्नी डा.मनोरमा, तीनों पुत्रियों, अपर्णा , निधि एवं डॉ. अरुणा तथा दामाद सुमन कुमार के प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहता हूँ क्योंकि जो कुछ भी मैं कर पाया हूँ उनके समय से ही मैंने समय निकाला है। सुबह 8 से शाम 7 बजे तक बैंक की नौकरी को निष्ठापूर्ण ढंग से निबाहते हुए जो समय मेरे परिवार को मिलना चाहिए था वह समय मैंने अपने लेखन में लगाया है। इसलिए अपने परिवारजनों के प्रति सही अर्थों में मुझे सर्वप्रथम कृतज्ञता ज्ञापित करनी चाहिए।

अंत में उन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहता हूँ जो परोक्ष रूप से मेरे शुभचिंतक रहे हैं। सौभाग्य से ऐसे शुभचिंतकों की सूची बहुत लम्बी है अतः मैं उन सभी के प्रति भी आभार व्यक्त करना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ।

डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ

प्राक्कथन 3

अध्याय 1- राजभाषा की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि : **1-28**

राजभाषा की विकास यात्रा, हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी, प्रशासन एवं भाषा व्यवस्था राजभाषा और राष्ट्रभाषा व्यवस्था राजभाषा और राष्ट्र भाषा में अंतर, संविधान में हिंदी, राजभाषा विकास के कानूनी पहलू - कम्प्यूटर और हिंदी; भारत की बहुभाषिकता और सम्पर्क भाषा हिंदी

अध्याय 2 - राजभाषा विषयक सांविधिक प्रावधान **29-58**

प्रादेशिक भाषाएँ, अष्टम अनुसूची, राष्ट्रपति का आदेश 1952 एवं 55, 60, राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित 1967), राजभाषा नियम 1976 (यथा संशोधित 1987), राजभाषा संकल्प 1968, त्रिभाषा सूत्र

अध्याय 3 - हिंदीतर राज्यों के प्रशासनिक क्षेत्रों में हिंदी कार्यान्वयन की स्थिति **59-64**

प्रशासनिक क्षेत्रों से आशय, हिंदी की स्थिति के चार क्षेत्र, वार्षिक कार्यक्रम का कार्यान्वयन, राजभाषा नीति का कार्यान्वयन, भारतीय रिज़र्व बैंक व वित्त मंत्रालय की भूमिका, विभिन्न समितियों की भूमिका, केंद्र सरकार के उपक्रम, केंद्र सरकार का कार्यालय, निजी क्षेत्र

अध्याय 4 - अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी **65-100**

हिंदी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है, अन्य राष्ट्रों में हिंदी, विश्व में हिंदी अध्ययन केंद्र, भाषा शोध अध्ययन - 2005 का खुलासा, भारत में हिंदी जानने वालों की राज्यवार स्थिति, विश्व में हिंदी चीनी जानने वालों की संख्या, चीन में बोली जाने वाली भाषाएँ, सूचना के स्रोत हेतु आभार, विश्व के समाचार पत्रों में हिंदी

अध्याय 5 - हिंदी के प्रचार प्रसार में विभिन्न हिंदी संस्थाओं की भूमिका **101-111**

सरकारी संस्थाएँ, केंद्रीय हिंदी संस्थान, भारतीय भाषा संस्थान, गैर सरकारी संस्थाए/ट्रस्ट,स्वयं सेवी संस्थाएँ, स्वयं सेवी संस्थाओं की मान्यता, हिंदी परीक्षाओं की मान्यता, व्यक्ति जो स्वयं संस्था हैं।

अध्याय 6 - हिंदी और देवनागरी लिपि के मानकीकरण की समस्या **112-137**

मानकीकरण का अर्थ एवं उद्देश्य, मानकीकरण बनाम आधुनिकीकरण, हिंदी का मानकीकरण, देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण, संख्यावाचक शब्दों की वर्तनी, हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में आधुनिकीकरण, हिंदी एवं दक्षिण भारतीय भाषाओं में आधुनिकीकरण प्रक्रिया, लिपि में आधुनिकीकरण, शब्दावली में आधुनिकीकरण भाषा के आधुनिकीकरण के अन्य आयाम, सूचना प्रौद्योगिकी और भाषा का आधुनिकीकरण, नवीनतम प्रस्ताव

अध्याय 7 - राजभाषा का अनुप्रयोगात्मक पक्ष **138-195**

(क) हिंदी आलेखन (ख) टिप्पण (ग) संक्षेपण (घ) पत्राचार

अध्याय 8 - कार्यालय अभिलेखों के हिंदी अनुवाद की समस्या **196-211**

शब्दावली, अभिव्यक्ति, व्यावहारिक पहलू, कार्यालयीन अनुवाद में लिप्यंतरण, प्रशासनिक अनुवाद, प्रशासनिक अनुवाद के नमूने, विधि संबंधी अनुवाद, विधि संबंधी अनुवाद के नमूने

अध्याय 9 - हिंदी कम्प्यूटीकरण **212-237**

प्रस्तावना, सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी, कोर समाधान, बैंको में राजभाषा और कम्प्यूटरीकरण आरंभिक दौर वर्ड प्रोसेसिंग, हिंदी में डाटा प्रोसेसिंग, डास आधारित पैकैजों हेतु हिंदी पैकैज आरंभिक दौर में इन्टरफ़ेस, कोर की दिशा में अन्य विकल्प, कम्प्यूटर अनुवाद और भारतीय भाषाएँ, सरकारी आदेश और कम्प्यूटरी करण, कम्प्यूटर पर सुविधाएँ, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्र